अपनी बात

तिब्बत में चीन के आतंक की चौतरफा निंदा

हाल ही आईसलैंड की संसद में सभी राजनीतिक दलों के सांसदों ने एक प्रस्ताव पारित करके चीन सरकार से अनुरोध किया है कि वह तिब्बती धर्मगुरू परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि के साथ उनके बताए मध्यम मार्ग के विषय में सार्थक वार्ता प्रारंभ करे और तिब्बत समस्या को हल करे। इस तरह के प्रस्ताव और भी देश पारित करें और चीन सरकार पर दबाव बढ़ायें तो इससे मानवाधिकारों, अंतर्राष्ट्रीय कानूनों, पर्यावरण तथा विश्व शांति की सुरक्षा हो सकेगी। ज्ञातव्य है कि तिब्बत पर अपने अवैध आधिपत्य के समय से ही चीन की सरकार तिब्बत में तिब्बतियों को बहुत क्रूर तरीके से प्रताड़ित करने की नीति पर चल रही है। प्राकृतिक संपदा को चीन द्वारा लूटा जा रहा है। इस लूट से वहाँ का पर्यावरण की सुरक्षा खतरे में है। आईसलैंड की संसद द्वारा पारित प्रस्ताव सचमुच सराहनीय है और विश्व के अन्य संसदों के लिए अनुकरणीय है। इस ओर विश्व के सभी सांसदों को ध्यान देना चाहिये।

तिब्बत में आत्मदाह की दुर्भाग्यपूर्ण घटनायें अब भी जारी हैं। चीन सरकार द्वारा की जा रही अमानवीय प्रताड़ना से तंग आकर तथा इस ओर विश्व समुदाय का ध्यान आकर्शित करने के लिए तिब्बती अपने देश के अंदर तथा बाहर भी आत्मदाह के जरिये विचलित करने वाला आत्म बलिदान कर रहे हैं। नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित एक दर्जन चिंतकों ने एक पत्र लिखकर चीन सरकार से समस्या को यथाशीघ्र निपटाने की मांग की है। उन्होंने भी यही कहा है कि चीन सरकार दलाई लामा के प्रतिनिधि के साथ शीघ्र सार्थक वार्ता प्रारंभ करे। पत्र में सलाह दी गई है कि वार्ता का आधार दलाई लामा द्वारा प्रस्तुत मध्यम मार्ग हो। ज्ञातव्य है कि दलाई लामा मध्यम मार्ग के जरिये चीन के संविधान के अनुरूप चीन के अंदर ही तिब्बत के लिए वास्तविक स्वायत्तता की मांग कर रहे हैं। तिब्बत की निर्वासित सरकार भी केवल वास्तविक स्वायत्ता की मांग कर रही है। यह मांग उचित भी है, क्योंकि जब चीन की सरकार तिब्बत और तिब्बतियों को बर्बाद कर देगी, तब आजादी लेने का कोई महत्व नहीं रह जाएगा। नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित चिंतकों के पत्र से भी चीन की तिब्बत में जारी साजिषपूर्ण क्रूर अमानवीय तथा आलोकतांत्रिक नीति का फर्दाफाष हो गया है।

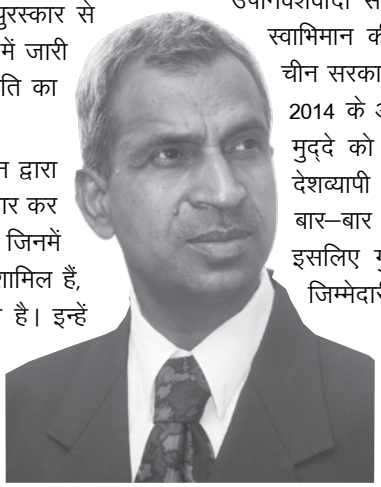

उधर स्पेन के आपराधिक न्यायालय ने भी चीन द्वारा तिब्बत में की गई क्रूरता के प्रति कड़ा रूख अख्तियार कर लिया है। अदालत ने चीन के पाँच शीर्ष नेताओं, जिनमें पूर्व राष्ट्रपति हु जिंताओ तथा जियांग जेमिन भी शामिल हैं, के खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट जारी कर दिया है। इन्हें तिब्बत में सामूहिक नरसंहार के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। ज्ञातत्व है कि चीन के ये सभी शीर्ष नेता तिब्बत में सुधार के नाम पर तिब्बत की आध्यात्मिक–सांस्कृतिक पहचान को नष्ट कर रहे थे। वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद कर रहे थे। उनके कार्यकाल में सभी मानवीय मूल्यों तथा कानूनी मानदंडों का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा था। क्या उम्मीद की जानी चाहिए कि स्पेन की अदालत द्वारा जारी गिरफ्तारी वारंट के संदर्भ में चीन की वर्तमान सरकार तिब्बत के मामले में अपनी क्रूर नीति में बदलाव लाएगी?

लगता है चीन सरकार का रवैया बदलने वाला नहीं है। तथाकथित स्वायत्त तिब्बत क्षेत्र में साम्यवादी पार्टी के जो सचिव हैं उन्होंने एक नई रणनीति बनाई है, जिसके अनुसार तिब्बतियों को अपने धर्मगुरू दलाई लामा से अलग किया जाए तथा उन्हें बौद्ध संस्कृति से भी दूर कर दिया जाए। यह जले पर नमक छिड़कने जैसा है। पहले से ही वहाँ मंदिर–मठ सेना की छावनी और चीन की सरकार के कार्यालय बना दिए गए हैं। बौद्ध जनता को, जिसमें लामागण भी शामिल हैं, प्रताड़ित किया जा रहा है। लेकिन निंदा–आलोचना से बेपरवाह पार्टी सचिव तिब्बतियों की धर्म–संस्कृति–इतिहास के खिलाफ नया षड्यंत्र रच रहे हैं। यह निंदनीय है और पार्टी सचिव को अपनी योजना वापस लेनी चाहिये। धर्म को अपनी घृणित राजनीति से जोड़ने का उनका प्रयास मानवता एवं लोकतांत्रिक मर्यादाओं के खिलाफ है।

हाल ही तिब्बती सांसदों का एक प्रतिनिधि मंडल यूरोप–प्रवास पर था। उस प्रवास के दौरान फ्रांसीसी संसद ने स्पष्ट किया कि तिब्बत एक अंतर्राष्ट्रीय मसला है तथा वह तिब्बत समस्या के हल हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी।

इसी प्रकार दलाई लामा जी अभी आध्यात्मिक प्रवचन हेतु जापान गए थे और भारत स्थित धर्मशाला में भी उन्होंने आध्यात्मिक प्रवचन किए। आयोजनों में अनेक देशी–विदेशी श्रद्धालु उपस्थित हुए। उन सबने महसूस किया कि बौद्ध दर्शन तिब्बत में चीन सरकार की साम्राज्यवादी नीति के कारण गंभीर खतरे में है।

इस तरह स्पष्ट है कि विश्व मंच पर तिब्बत के मामले में चीन की उपनिवेशवादी सरकार बेनकाब हो गई है। भारत के राष्ट्रीय हित एवं स्वाभिमान की सुरक्षा हेतु भारतीय संसद को भी चाहिए कि वह चीन सरकार की गलत नीतियों का पूरी दृढ़ता से विरोध करे। वर्ष 2014 के आम चुनाव के दौरान भी सभी राजनीतिक दल तिब्बत मुद्दे को गंभीरता से अपने चुनावी वादों में शामिल करें तथा देशव्यापी जन जागरण का दायित्व पूरा करें। दलाई लामा जी बार–बार कहते हैं कि भारत गुरू है और तिब्बत उसका चेला। इसलिए गुरू की चेले की सुरक्षा के लिए आगे आना नैतिक जिम्मेदारी है। ◆

प्रो0 शयामनाथ मिश्रा
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राज.)
E-mail :- shyamnathji@gmail.com

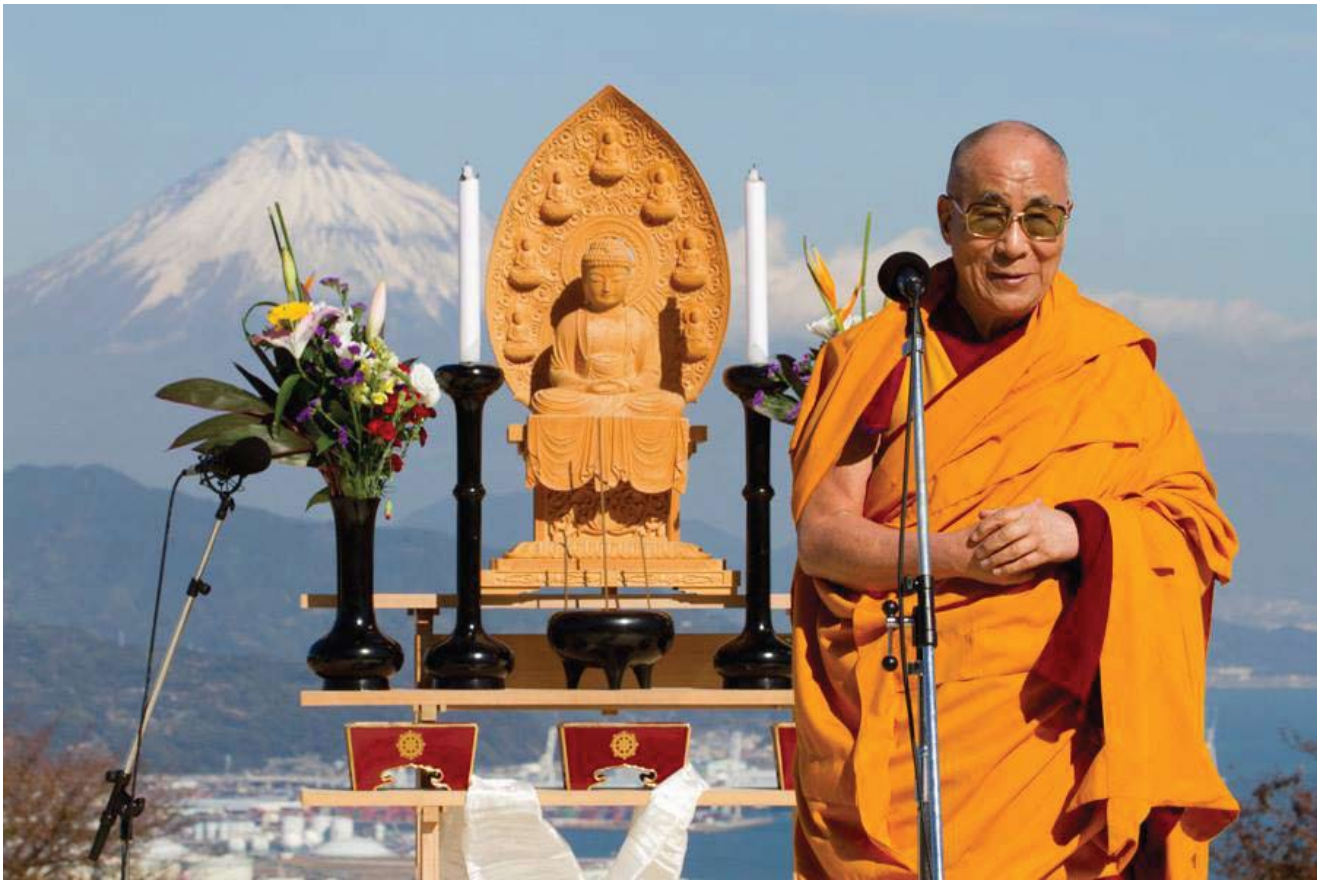

दलाई लामा ने 11 दिवसीय जापान दौरा संपन्न किया

(तिब्बतनरीव्यू नेट, 27 नवंबर, 2013)

दलाई लामा ने गत 25 नवंबर को जापान की अपनी 11 दिवसीय यात्रा संपन्न की। अपनी यात्रा के अंतिम दिन उन्होंने टोक्यो के रयोगुकु कोकुगिकन हॉल में जुटे करीब 2,500 लोगों को 'मेरे जीवन में बौद्ध विवेक का सर्वश्रेष्ठ इस्तेमाल' विषय पर व्याख्यान को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि बाकी मानवता के लिए चिंता किसी व्यक्ति के खुद अपने हित में है और अपनी मदद करने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि दूसरों की मदद की जाए। उन्होंने कहा कि इस तरह का रवैया कारण–कार्य सिद्धांत और परस्पर निर्भरता के बौद्ध सिद्धांतों पर आधारित है।

इसके पहले दस दिनों तक दलाई लामा ने शांति, धर्म, कला एवं संस्कृति पर कई व्याख्यान को संबोधित किए, वै. ज्ञानिकों और अन्य वर्गों के साथ संवाद में हिस्सा लिया और विद्यार्थियों तथा दूसरे धर्मों के अनुयायियों के साथ संवाद किया।

उनका पहला संवाद 16 नवंबर को विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी का मानव कल्याण में योगदान विषय पर छिबा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में हुआ जहां करीब 600 शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित थे।

टोक्यो में 17 नवंबर को उन्होंने 'ब्रह्मांड, जीवन और शिक्षा' विषय पर जापानी वैज्ञानिकों के साथ एक संवाद में हिस्सा लिया। दलाई लामा ने वर्ष 2004 में जापानी वैज्ञानिकों के साथ संवाद की शुरुआत की थी और इस क्रम

का यह पांचवां संवाद है। उनका तीसरा संवाद "दुनिया में आज़ादी लाने के लिए अभिव्यक्ति के तरीके की संभावना" विषय पर प्रख्यात लेखक बनाना योशिमोतो के साथ 24 नवंबर को क्योटो इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस सेंटर के साथ हुआ।

18 नवंबर को दलाई लामा ने याकुमो एकेडमी के एक बालिका स्कूल का दौरा किया और 950 विद्यार्थियों के साथ संवाद किया। इसके अगले दिन उन्होंने टोक्यो के जोजोई मंदिर का दौरा किया जो कि जापानी बौद्ध परं. परा की शुद्ध भूमि जोडो शू से जुड़ा है। यह मंदिर एकनिष्ठ ध्यान पाठ नेम्बुत्सु के प्रति समर्पित है जो कि अमित. ाभ बुद्ध के प्रति समर्पित है। वह 'लाइव ऑन' एनजीओ की सुश्री तेरुमी आकोकु द्वारा निमंत्रित किए गए थे। यह एनजीओ आत्महत्या को रोकने और बीमारियों, दैवी आपदा, आत्महत्या, आतंकवाद, युद्ध आदि से अपने मां–बाप खो चुके बच्चों को सहायता देता है। अकोकु का लक्ष्य यह है कि लोग विषाद से निकलकर उम्मीद की तलाश करें। उन्होंने तिब्बती अध्ययन के जापानी विद्वानों के साथ भी एक बैठक की। तिब्बत के इस आध्यात्मिक नेता का पहला सार्वजनिक व्याख्यान 21 नवंबर, को शिजोकुआज सेंचुरी होटल में हुआ, जिसका विषय था–'एक शांतिपूर्ण 21वीं सदी की ओर बढ़ना'। उनका व्याख्यान सुनने के लिए करीब 2,000 लोग उप. स्थित थे। जापान के बुजुर्ग राजनीतिज्ञ और तिब्बत आंदोलन के प्रबल समर्थकश्री सीशू माकिनो ने उनका स्वागत किया। अगले दिन दलाई लामा ने शिजुओको में आयोजित सर्व धर्म बैठक में हिस्सा लिया जिसमें मुख्य जोर विश्व शांति पर था। इसका आयोजन जापान एवं पूर्वी एशिया के लिए परमपावन दलाई लामा के टोक्यो स्थित लायजन ऑफिस के संयोजन में सेव तिब्बत नेटवर्क द्वारा किया गया था। आयोजन समिति के अध्यक्ष के रूप में माकिनो ने दलाई लामा का परिचय देते हुए शुरुआती भाषण दिया। इस सर्व धर्म सम्मेलन में शिंतो, ईसाई, मुस्लिमों एक मिश्रित समूह, जापानी बौद्ध धर्म की विभिन्न परंपराओं जैसे शुगेंदु, शिगोंन, रिनजाई और जुडो शू के अनुयायी शामिल थे।

इसके बाद 23 नवंबर को क्योटो सीका विश्वविद्यालय में दलाई लामा ने विश्वविद्यालय की 45वें स्थापना दिवस पर करीब 1600 विद्यार्थियों और कर्मचारियों को कला एवं संस्कृति पर व्याख्यान दिया। उन्होंने टोक्यो के रोगोक्यू कोकुगिक. ान हॉल में 25 नवंबर को एक और सार्वजनिक व्याख्यान दिया जिसका विषय था– 'दैनिक जीवन में बौद्ध बुद्धिमत्ता का सर्वश्रेष्ठ इस्तेमाल'। ◆

तिब्बत में नरसंहार के लिए चीन के शीर्ष रिटायर्ड नेता के खिलाफ स्पेन की कोर्ट ने अरेस्ट वारंट जारी किया

(तिब्बतन रीव्यू नेट, २० नवंबर, २०१३)

तिब्बत में नरसंहार की नीतियों और कार्रवाई के लिए चीन के एक शीर्ष नेता के खिलाफा आपराधिक मुकदमे की कार्रवाई और आगे बढ़ गई है। स्पेन की नेशनल कोर्ट के जजों ने गत 18 नवंबर को पूर्व राष्ट्रपति एवं पार्टी सचिव जियांग जे. मिन सहित चीन के पांच राष्ट्रीय नेताओं के खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट जारी किया। चीन के रिटायर्ड शीर्ष नेता श्री हू जिनताओ के लिए कानून का शिकंजा कसता जा रहा है, कोर्ट ने उन्हें 9 अक्टूबर तक उन्हें अपने खिलाफ अभियोग और तिब्बत में अपनी नीतियों के बारे में उन सवालों का जवाब देने को कहा था जो स्पेन की राजधानी मैड्रिड में चीनी दूतावास के माध्यम से भेजा गया था।

तिब्बत के हालात के बारे में इस मुकदमे की सुनवाई स्पेन की अदालत अंतरराष्ट्रीय कानून के "सार्वभौमिक अधिकार क्षेत्र" के सिद्धांतों के अनुरूप कर रही है। इस सिद्धांत के तहत अदालतों को यह इजाजत होती है कि व्यक्तियों, सरकारों या सैन्य अधिकारियों द्वारा किए गए प्रताड़ना, आतंक या अन्य गंभीर अंतरराष्ट्रीय अपराधों के माममले में राष्ट्रीय सीमा के बाहर के मामलों की भी सुनवाई करे। जियांग जेमिन के अलावा चार अन्य जिन रिटायर्ड चीनी नेताओं के खिलाफ वारंट जारी किया गया है, वे हैं–1980 और 1990 के दशक में तिब्बत में दमन के लिए जिम्मेदार रहे तत्कालीन प्रधानमंत्री ली पेंग, 1980 के दशक में तिब्बत में सैनिक शासन के दौरान अर्द्धसैनिक जन सशस्त्र बल की जिम्मेदारी संभाल रहे राज्य सुरक्षा प्रमुख कियो शी, 1992 से 2001 के बीच तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र में कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव रहे छेन कुइयुयान (तिब्बती धर्म और संस्कृति के खिलाफ खासतौर से दुश्मनी भरा रवैया अपनाने के लिए कुख्यात) और 1990 के दशक में परिवार नियोजन के मंत्री रहे देंग डेलियुन (पेंग पेलियुन प्रचलित नाम)।

इन नेताओं में से तो कोई भी ऐसा नहीं लगता कि खुद आत्मसमर्पण करेगा, इसलिए इस अरेस्ट वारंट का तामील कर पाना बेहद महत्वपूर्ण मसला हो गया है। अब चीन के ये वांछित नेता चीन जनवादी गणतंत्र के बाहर यात्रा नहीं कर सकते क्योंकि उनके गिरफ्तार किए जाने का डर बना हुआ है। इस बात की भी संभावना है कि उनके विदेश में स्थित बैंक खातों (यदि कोई ऐसा है) को भी सील कर दिया जाए।

पूर्व राष्ट्रपति और पार्टी सचिव हू जिनताओ पर अभियान 9 अक्टूबर से पहले नहीं चलाया जा सका था क्योंकि उसके पहले उनको राजनयिक तौर पर छूट मिली हुई थी।

स्पेन की अदालत ने 18 नवंबर के अपने आदेश में खासतौर से उक्त चीनी नेताओं के तिब्बत में नीति के लिए "राजनीतिक एवं आपराधिक जिम्मेदारी" का हवाला दिया और पिछले आठ साल के लिए इस बारे में पेश साक्ष्यों को आधार बनाया। इन साक्ष्यों में पूर्व राजनीतिक कैदियों, अंतरराष्ट्रीय विशेषों के बयान, हत्याओं एवं प्रताड़ना

का दस्तावेज और एनजीओ सहित तमाम संस्थाओं की रिपोर्ट शामिल हैं।

अंतरराष्ट्रीय गिरफ्तारी के आदेश का पालन सरकारों द्वारा नहीं बल्कि जारी करने वाले देश की पुलिस द्वारा इंटरपोल की मदद से किया जाता है।

चीन ने इसके पहले तिब्बत मामले की सुनवाई में नेशनल कोर्ट द्वारा शुरुआती आदेश जारी करने के बाद स्पेन की सरकार और न्यायपालिका पर भारी दबाव बनाया था। चीन ने अदालत के इस निर्णय को अपने आंतरिक मामलों में दखल और दोनों देशों के बीच अच्छे रिश्ते को बिगाड़ने का शडयंत्र बताया है। इस दबाव के बाद स्पेन की संसद ने अपने कानून में बदलाव करने का निर्णय लिया है ताकि देश की अदालत को सिर्फ उन अंतरराष्ट्रीय मामलों में सुनवाई करने का अधिकार हो जो स्पेन के किसी नागरिक या निवासी से सीधे तौर पर जुड़ा हो।

हू जिनताओ के मामले में, मुख्य वादी स्पेन के एनजीओ कमिटे डे अपोयो अल तिब्बत (सीएटी) के वकीलों ने अदालत से अनुरोध किया कि तिब्बत में हू की नीतियों के बारे में उनसे द्वारा तैयार सवाल पूछे जाएं। ये सवाल 1988 से 1992 की अवधि के दौरान तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र में उनके पार्टी सचिव रहने की अवधि से जुड़े हैं और 2003 के बाद चीन के राष्ट्रपति और पार्टी सचिव के रूप में तिब्बत के बारे में नीतियों की उनकी जवाबदेही के बारे में हैं क्योंकि "पार्टी और सरकार दोनों जगहों पर सबसे ऊंचे पायदान पर बैठे व्यक्ति थे।"

वर्ष 1977 में स्थापित स्पेन के नेशनल कोर्ट ने वैश्विक न्यायिक क्षेत्र वाले मामलों को तब से आगे बढ़ाना जारी रखा है, जब उसने चिली के पूर्व राष्ट्रपति अगस्टो पिनोशे के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय वारंट जारी किया था, जिन्होंने सल्वाडोर एलेंड का तख्ता पटलकर 17 साल तक राष्ट्रपति का ऐसा कार्यकाल चलाया जिसमें हजारों लोगों का कत्लेआम हुआ। पिनोशे को करीब दो साल तक लंदन में हिरासत में रखा गया, जिसके बाद ब्रिटेन के गृह सचिव जैक स्ट्रा ने स्वास्थ्य के आधार पर उन्हें रिहा करने का आदेश दिया और उन्हें चिली जाने की इजाजत दी गई। ◆

तिब्बत में आत्मदाह की 123वीं घटना में भिक्षु की मौत

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, 13 नवंबर, 2013)

तिब्बत में चीन के तानाशाही शासन से टकराव बढ़ता जा रहा है क्योंकि चीनी शासन ने लोगों को अपने घरों और मठों पर कम्युनिस्ट चीन के प्रति वफादारी दिखाने वाला लाल झंडा फहराने का फरमान जारी कर दिया है। इसके विरोध में गत 11 नवंबर की शाम को एक युवा भिक्षु ने आत्मदाह कर लिया। आत्मदाह से पहले इस भिक्षु ने अपने साथी तिब्बतियों से आह्वान किया कि वे उठ खड़े हों और उसने यह मांग की कि दलाई लामा को निर्वासन से तिब्बत वापस लाया जाए। यह घटना क्विंघई प्रांत के गोलोग प्रशासनिक क्षेत्र में स्थित पेमा काउंटी में करीब 6.30 बजे सायं को हुई। सिर्फ 20 वर्ष के सेरिंग ग्याल नाम के इस भिक्षु की उसी दिन रात में करीब 10 बजे प्रांत की राजधानी शीनिंग के एक अस्पताल में मौत हो गई। खबर के अनुसार इस भिक्षु ने अपनी भाषा और परंपरा को बचाने के लिए सभी तिब्बतियों की एकता का आह्वान किया था जो उनके मुताबिक एकता को मजबूत करने के लिए जरूरी था।

यह घटना पेमा काउंटी कस्बे में काउंटी के मुख्यालय की तरफ जाने वाले रास्ते में कस्बे के बीच में बने एक विशाल कमल जैसे कॉन्क्रीट इमारत से कुछ ही मीटर की दूरी पर हुआ। यह भिक्षु अक्योंग मठ से जुड़े थे जो तिब्बती बौद्ध धर्म के जोनांग परंपरा का अनुसरण करता है। चीनी पुलिस तत्काल ही घटनास्थल पर पहुंच गई और उसने लपटों को बुझा दिया तथा भिक्षु को पहले काउंटी के स्थानीय अस्पताल में ले गई। लेकिन तिब्बतियों के लगातार माग के बाद चीनी प्रशासन ने भिक्षु को दो रिश्तेदारों के साथ शीनिंग के बड़े अस्पताल में जाने दिया।

लेकिन उनकी मौत के बाद उनके शव को मठ लाया गया जहां उक्त मठ के अलावा पेयाग और गोमांग मठ के भी करीब 200 भिक्षुओं ने जमा होकर उनका अंतिम संस्कार और प्रार्थना की।

खबर के अनुसार इसके बाद सुरक्षा व्यवस्था सख्त करने के लिए काउंटी में बड़ी संख्या में चीन की जन सशस्त्र पुलिस बल के जवान तैनात कर दिए गए हैं। काउंटी के बाहर से किसी भी तिब्बती के आने और भीतर से किसी के बाहर जाने पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है।

इस भिक्षु की घटना के साथ ही फरवरी 2009 से अब तक चीनी शासन और नीतियों के विरोध में कम से कम 123 तिब्बतियों ने आत्मदाह कर लिया है। सेरिंग ग्याल के पहले दो बच्चों के पिता, 41 वर्षीय शिछुंग ने गत 28 सितंबर, 2013 को सिचुआन प्रांत के नाबा प्रशासनिक क्षेत्र में स्थित नाबा काउंटी के अपने मकान के निकट ही आत्मदाह कर लिया था। शिछुंग ने इसके पहले दलाई लामा की तस्वीर के सामने मक्खन के दिए जलाए थे। ◆

दलाई लामा के साथ खास इंटरव्यू

(फायनेंशियल टाइम्स, नवंबर 9, 2013)
एमी काजमिन

"मेरी हमेषा यह प्रार्थना रहती है कि चीनी नेतृत्व में आम समझ बढ़े"

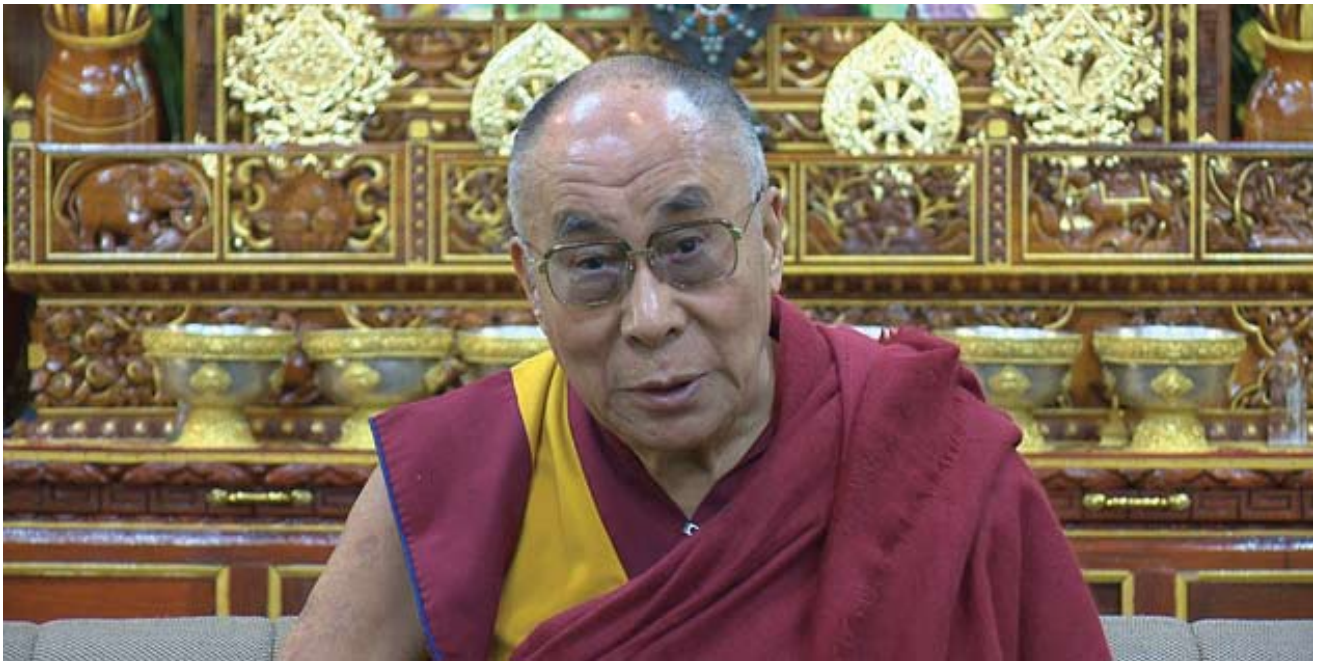

नई दिल्ली से रात भर की ट्रेन यात्रा और हिमालय में दो घंटे की ड्राइविंग के बाद मैं धर्मशाला पहुंचा, तिब्बतियों के निर्वासित आध्यात्मिक नेता दलाई लामा के भारत स्थित ठिकाने पर। मौसम धुंधला और नम था, लेकिन माहौल त्योहारी लग रहा था क्योंकि लोगों का झुंड सुगलाकखांग मंदिर की ओर जा रहा था, जहां दलाई लामा ज्ञान के मार्ग की ओर चलने के 14वीं सदी के बौद्ध पाठ के बारे में तीन दिन का सार्वजनिक उपदेश दे रहे थे।

अपने होटल में थोड़ी देर ठहरने के दौरान मैंने नजदीक ही स्थित मंदिर से लाउडस्पीकर पर आ रही दुनिया के सबसे प्रसिद्ध बौद्ध संन्यासी की आवाज सुनी। खासतौर से जब दलाई लामा श्रोताओं से अंग्रेजी में बोलते हैं, तो वह सरल दिल वाले लगते हैं और उनके वाक्यों के बीच–बीच में दबी हुई हंसी भी रहती है। लेकिन आज 78 वर्षीय नेता, जो चीन की जनमुक्ति सेना द्वारा अपनी मातृभूमि पर कब्जा जमाने के नौ साल बाद 1959 में बचकर भारत आए थे, अपनी मातृभाषा में बोल रहे थे। उनका लहजा थोड़ा दबा हुआ था, लेकिन गंभीर और नम्र था।

जल्दी ही मैं तिब्बती शरणार्थियों के बीच था (भारतीय एवं पश्चिमी)–समर्पित एवं जिज्ञासु–जो झुंड में मंदिर की ओर बढ़ रहे थे, एक गली के रास्ते, चीनी शासन के तहत तिब्बतियों के असंतोष को याद दिलाते हुए। एक बड़े बैनर पर लिखा हुआ था, "तिब्बत के लिए जीवन का बलिदान" जो पिछले दो साल में 100 से ज्यादा आत्मदाह करने वाले तिब्बतियों के सम्मान में था। इन तिब्बतियों ने अपने मातृभूमि में दमन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए और दलाई लामा की वापसी की मांग करते हुए यह कदम उठाया था।

आत्मदाह करने वाले हर तिब्बती की तस्वीर–उनके नाम, उम्र और खुद को आग लगाने की तिथि सहित– को लपटों से घिरा दिखाया गया था। एक और बैनर में कुछ तिब्बतियों की भयावह तस्वीर थी, जिन्हें कथित रूप से 6 जुलाई को सिचुआन प्रांत में दलाई लामा का जन्म दिन मनाते समय पुलिस ने गोली से उड़ा दिया था। एक काला संगमरमर त्रिकोण दिखा जिस पर "तिब्बती राष्ट्रीय शहीद स्मारक" लिखा हुआ था और एक संग्रहालय भी था जिसमें चीन में मानवाधिकारों के उल्लंघन के बारे में विस्तार से बताया गया था।

लेकिन यहां सिपर्फ राजनीति ही नहीं दिख रही थी। ब्राजील के फुटबॉल जैकेट पहने एक तिब्बती व्यक्ति दलाई लामा की किताबें बेच रहा था जिनमें उनकी पुस्तक 'बियांड रिलीजनः एथिक्स फॉर अ होल वर्ल्ड' (2011) भी थी। तिब्बती साहित्य और पुरा लेख के पुस्तकालय के एक भिक्षु अनुवाद और पवित्र बौद्ध ग्रंथों के अनुवाद के लिए दान देने की अपील कर रहे थे। एक घूम–घूम कर प्रचार करने वाला व्यक्ति "तिब्बत पावर हीलिंग" बेच रहा था जो उसके दावे के मुताबिक "30 मिनट की चक्र उपचार से आपके दिमाग को तनाव और चिंता से मुक्त कर देता है। पास में रखी एक मेज पर लेमन टार्ट, ब्राउनी और गाजर के केक रखे हुए थे।

मंदिर के भीतर 14वें दलाई लामा एक ऊंचे सिंहासन पर बैठे हुए थे, जिन्हें बहुत से तिब्बती जीवित ईश्वर की तरह पूजते हैं और करुणा के बोधिसत्व का अवतार मानते हैं। उनके पीछे बुद्ध की एक बड़ी सुनहली मूर्ति दिख रही थी और आसपास मानवता का अपार सागर दिख रहा था। कत्थई लबादे में रहने वाले भिक्षु, सिर मुड़ाई हुई भिक्षुणियां, कमजोर बुजुर्ग हाथ में प्रार्थना का मनका लिए हुए और परंपरागत परिधान में बच्चों के साथ परिवार फर्श पर पालथी मारे बैठे थे। जो लोग सीधे नहीं देख पा रहे थे वे अपने अपने आध्यात्मिक नेता को टीवी स्क्रीन पर देख रहे थे।

हजारों की इस भीड़ में अमेरिकी, जापानी, यूरोपीय, कोरियाई जैसे विदेशी नागरिक भी दिख रहे थे, जिससे यह अंदाजा लगता है कि एक अलग–थलग देश से एक अनजान नेता के रूप में निर्वासन में आए दलाई लामा किस तरह आज दुनिया भर में जाने–माने नाम हो गए हैं, जिनके अस्सी लाख से ज्यादा ट्विटर फॉलोवर हैं और अभिनेता रिचर्ड गेरे जैसे तमाम सेलेब्रिटी जिनके प्रशंसक हैं। "प्रकाश के मार्ग के विभिन्न चरणों के गीत" की व्याख्या करते हुए तिब्बती आध्यात्मिक नेता ने सार्वभौमिकता की ऐसी झलक पेश की जिसकी वजह से वह इस धर्मनिरपेक्ष जमाने का लोकप्रिय पैगंबर बन गए हैं। उन्होंने बौद्ध धर्म के अनुसार 10 अवगुणों से बचने का आग्रह किया–हत्या, चोरी, विभाजनकारी बातचीत,

लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह की बात सिर्फ बौद्ध धर्म की थाती नहीं है। उन्होंने कहा, "जो लोग ईसाई हैं उनके लिए यह ईसाइयत का दस्तूर हो सकता हैद्व जो मुस्लिम हैं उनके लिए इस्लाम का और जो बौद्ध हैं उनके लिए बौद्ध दस्तूर। मैं दूसरी धार्मिक परंपराओं का भी सम्मान करता हूं, उस बात के लिए जो उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया है।

दोपहर में उन्होंने उस दिन का सत्र क्षमा याचना के साथ खत्म करते हुए कहा, "यदि मैं लंबे समय तक उपदेश दूंगा तो बहुत थक जाऊंगा।" अपने दो सहयोगियों के सहारे दलाई लामा एक भिक्षु के पीछे चलने लगे जो एक धूपबत्ती जलते हुए पीतल का कटोरा लेकर चल रहे थे। वह सीढ़ियों से नीचे मंदिर के प्रांगण में गए जहां, एक कार उन्हें उनके आवास तक ले जाने के लिए इंतजार में खड़ी थी। उन्होंने कुछ भक्तों को आशीर्वाद दिया और कार में घुस गए। इसके बाद गाड़ी आगे बढ़ गई।

इसके कुछ दिनों बाद की बात है, मैं मंदिर के प्रांगण में टहल रहा था, तमाम लोग भिक्षुओं से जोशपूर्ण तरीके से तर्क–वितर्क करते दिख रहे थे और बच्चे अपने मां–बाप की निगरानी के तहत खेल रहे थे। मैं दलाई लामा के आवास की तरफ बढ़ रहा था, इस उम्मीद में कि नोबेल शांति पुरस्कार विजेता से आध्यात्मिकता के बारे में नहीं बल्कि दुनियावी चीजों के बारे में बात करूंगा, चीन के अशांति तिब्बती जनसंख्या के अधिकारों के बारे में और चीन के नए नेता शी जिनपिंग के शासन के तहत उनको ज्यादा धार्मिक एवं राजनीतिक आज़ादी मिलने की संभावना के बारे में। समूचे तिब्बत में सुरक्षा बलों के दमन की वजह से तिब्बत के पठार में मार्च 2008 से विरोध प्रदर्शनों की लहर चल रही है। लेकिन आत्मदाह की हाल की लहर से तो यह संकेत मिलता है कि आमतौर पर खामोश दिख रहे तिब्बतियों में सतह के भीतर काफी कुछ उबल रहा है। कम्युनिस्ट प्रशासन आत्मदाह के सभी निशान को सहजता से मिटा देता है और जो लोग इसके बारे में सूचनाएं फैलाते हैं उनको कठोर सजा दी जाती है। लेकिन इन आत्मदाह की तरफ दुनिया का ध्यान गया है और इससे बीजिंग के नेताओं को असहजा का सामना करना पड़ रहा है।

जून महीने में संभ्रांत माने जाने वाले सेंट्रल पार्टी स्कूल में जातीय अल्पसंख्यकों के विद्वान जिन वेई ने चीन सरकार से आग्रह किया कि तिब्बत के बारे में नए तरह

का "रचनात्मक" रवैया अपनाया जाए और दलाई लामा से बात की जाए जिन्हें सामान्य तौर पर कम्युनिस्ट नेता "भिक्षु के भेष में भेड़िया" बताते हैं।

उनकी यह जबर्दस्त अपील हांगकांग की एक पत्रिका में प्रकाशित हुई जिससे ऐसा लगता था कि उनको शीर्ष स्तर का समर्थन हासिल है। लेकिन एक प्रमुख पोलित ब्यूरो सदस्य ने तत्काल ही नीति में बदलाव की चर्चाओं को खारिज करते हुए कहा कि तथाकथित "दलाई गुट" पर सख्ती और गहरी की जाएगी। हाल में एक सरकारी श्वेतपत्र में तिब्बत में चीन सरकार की "वाजिब" नीतियों की तारीफ की गई है और कहा गया है कि बीजिंग की इस नीति से ही एक "पिछड़े, आदिम राज्य में आर्थिक एवं राजनीतिक विकास हुआ है।"

मुझे यह चेतावनी दी गई थी कि बौद्ध भिक्षु दलाई लामा राजनीतिक सवालों के जवाब नहीं देते। मार्च 2011 में तब 75 वर्ष के हो चुके दलाई लामा ने सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा की थी। इसके कुछ ही महीनों के भीतर 43 वर्षीय हार्वर्ड के कानूनी विद्वान लोबसांग सेंगे को निर्वासित तिब्बती प्रशासन का प्रमुख चुन लिया गया जिसके लिए 1,50,000 की जनसंख्या वाले मजबूत तिब्बती शरणार्थी समुदाय के भीतर चुनाव कराया गया।

लेकिन तेनजिन ग्यात्सो (दलाई लामा) के लिए अपनी राजनीतिक भूमिका निभाना इतना आसान नहीं था। एक किसान के बेटे तेनजिन को सिर्फ दो साल की उम्र में दलाई लामा का 14वां पुनर्जन्म मान लिया गया था। इसके बाद उन्हें बौद्ध दर्शन की पढ़ाई के लिए भेजा गया ओर 15 वर्ष की उम्र में उन्हें तिब्बत के आध्यात्मिक एवं लौकिक नेता का ताज सौंप दिया गया। आज वह हमारे बीच तिब्बतियों की गरिमा, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आज़ादी के जीवित अवतार के रूप में हैं, एक ऐसी भूमिका जिसकी भरपाई चुने हुए नेतृत्व से करना आसान नहीं है। उनके खिलाफ चीन के कटु बयानबाजी से यह धारणा मजबूत होती है कि असली सत्ता कहां पर निहित है।

पहाड़ी की चोटी पर फूलों की कतारों वाली सड़क से गुजरते हुए जब पहाड़ी की चोटी पर स्थित आवास पर पहुंचा तो कतार में खड़े करीब 20 आगंतुकों से मिलते हुए दलाई लामा थोड़े जोशीले और तरोताजा लग रहे थे, उन्हें धर्मशाला में रहने के दौरान हर दिन ऐसे आगंतुकों से मिलना पड़ता है। उनसे मिलने वाले तिब्बतियों में व्हीलचेयर पर बैठा मठ का एक रसोइया, अमेरिका जा रहा एक परिवार, मिर्गी का रोगी एक किशोर और एक दंपती जिसकी 12 वर्ष की बेटी एक दुर्घटना में मारी गई थी।

जब वह अंदर चले गए तो मुझे एक स्वागत कक्ष में ले जाया गया, जहां दलाई लामा दरवाजे पर खड़े थे। उन्होंने गर्मजोशी से मेरे हाथ को पकड़ा और मुझे एक सोफे पर बैठने को कहा, तथा खुद मेरे बगल की एक कुर्सी पर बैठ गए। उनके दो निजी सचिव–दोनों धर्मनिरपक्षे शिक्षा हासिल व्यक्ति– और एक अनुवादक भी साथ में थे। मैं समझ नहीं पा रहा था कि एक बोद्धि सत्व– एक ऐसा व्यक्ति जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया हो लेकिन दूसरों की मदद के लिए जिसने निर्वाण को टाल दिया हो–के साथ इंटरव्यू की शुरुआत कैसे करूं। मैंने वैसे ही किया जैसा कि हर इंटरव्यू में करता हूं, सबसे पहले अपना बिजनेस कार्ड दिया।

तिब्बत के आध्यात्मिक नेता ने मेरा नाम पढ़ा और उसे कई बार दोहराया और फिर अपने सहयोगियों से पूछा कि मैं कहां से हूं। मैनें जवाब दिया, "कैलिफोर्निया, लेकिन मेरा नाम पूर्वी यूरोपियन है। पोलैंड का यहूदी।" उन्होंने हल्की हंसी के साथ कहा, "चुने हुए लोग, हम भी अवलोकितेश्वर (करुणा के बुद्ध) द्वारा चुने गए लोग हैं लेकिन हमें काफी कुछ सहन करना पड़ रहा है।

दलाई लामा को इसमें काफी रुचि थी कि किस तरह से 2,000 साल तक निर्वासन में रहने के बावजूद यहूदियों ने अपने धर्म एवं संस्कृति को बनाए रखा। लेकिन मेरी रुचि इस बात में थी कि क्या तिब्बत पठार पर रहने वाले 60 लाख तिब्बती–जिन पर कि चीनी समाज में मिल जाने का भारी दबाव है–जल्दी ही अपनी पीड़ा से छुटकारा

पाएंगे। मैंने पूछा कि चीन से आने वाले परस्पर विरोधी संकेतों को वह किस तरह से लेते हैं–बदलाव और दमन के आह्वान साथ–साथ।

वह हंसते हुए जवाब देते हैं, "बहुत से अन्य लोगों की तरह भ्रमित रहता हूं।" इसके बाद वह कम्युनिस्ट चीन के कई युगों के बारे में बताते हैंः गहन, अव्यवहारिक विचारधारा का माओ का युग, 'पूंजीवाद से समाजवादी देश' बनाने का देंग जियोपिंग का युग, श्रमिकों के साथ ही धनी कारोबारियों और बुद्धिजीवियों का कम्युनिस्ट देश बनाने का जियांग जेमिन का युग और सामाजिक एवं आर्थिक भेद गहराने के बीच हू जिनताओ को 'सौहार्दपूर्ण समाज' बनाने का दौर। उन्होंने कहा, "इन घटनाओं को देखकर हमें वही पार्टी का अधिनायकवादी तंत्र ही दिखा है जो नई सच्चाइयों के मुताबिक कार्रवाई करने में सक्षम हुआ है। सौहार्दपूर्ण समाज बनाने का हू का अनुरोध एक तरह से विफल ही रहा है। उनका तरीका था पूरा नियंत्रण बनाए रखते हुए और ताकत के बल पर सौहार्द को बढ़ावा देना। यह एक गलती साबित हुई है। तार्किक रूप से सौहार्द तो दिल से आता है...सौहार्द काफी हद तक भरोसे पर निर्भर होता है। जब तक ताकत के बल पर डर पैदा किया जाता रहेगा, डर और भरोसा एक साथ नहीं हो सकता।

वह फोटो खींच रहे एफटी के फोटोग्राफर से कहा, "आप क्या सोचते हो? आप सुन रहे हो इसलिए मैं पूछ रहा हूं। यही सामान्य समझ है, ऐसा नहीं है? यहां तक कि एक जानवर से भी यदि आप लगाव दिखाएं तो धीरे–धीरे एक भरोसा कायम हो जाता है... लेकिन यदि आप हमेशा बुरा चे. हरा बनाए रखेंगे और पीटते रहेंगे तो दोस्ती कैसे कायम हो सकती है।"

तो क्या दलाई लामा यह मानते हैं कि पिछले वर्षों के मुकाबले अब चीनी नेता उनसे बातचीत करने को ज्यादा इच्छुक हैं? चीन लंबे समय से उन पर यह आरोप लगाता रहा है कि वह चीन की एक–चौथाई भूमि को आज़ाद करना चाहते हैं, जबकि वह इस बात पर जोर देते रहे हैं कि उन्हें तिब्बतियों के लिए चीन के भीतर ही सिर्फ स्वायत्तता चाहिए। चीन के कठोर नीतियों के पक्षधरों का मानना है कि एक बार दलाई लामा के परिदृश्य से गायब होने के बाद तिब्बती धार्मिक, पहचान और प्रतिरोध अपने आप धूमिल पड़ जाएगा।

उन्होंने कहा, "मैं आशावादी हूं। वे मुझसे प्यार करें या नहीं तिब्बतियों की समस्या बनी रहेगी।" उन्होंने कहा, "यह केवल तिब्बतियों की समस्या नहीं है, बल्कि चीन जनवादी गणतंत्र के लोगों की समस्या है। उन्हें इसका समाधान करना है। ताकत के इस्तेमाल का रास्ता विफल हो चुका है। इसलिए उन्हें अब तिब्बती जनता की संस्कृति और लोगों के सम्मान की नीति अपनानी चाहिए।"

यह वर्ष 2008 में तिब्बत में विरोध प्रदर्शन शुरू होने के बाद दलाई लामा के एफटी द्वारा किए गए इंटरव्यू से काफी अलग अपील थी। तब नोबेल विद्वान युवा और गुस्साई पीढ़ी पर अपने कम होते प्रभाव से दुखी थे। आज वह कुछ सहज और विश्वस्त लग रहे थे, इस बात पर जोर देते हुए कि वह ज्यादातर तिब्बतियों को राजी कर सकते हैं–यहां तक कि आज़ादी के पक्षधरों को भी–कि वह वाजिब स्वायत्तता मिलने पर चीनी शासन को स्वीकार करें। उन्होंने कहा, "तिब्बतियों के ऊपर मेरा थोड़ी नैतिक असर है। मैं इसका इस्तेमाल करते हुए अलगाव के समर्थक तिब्बतियों को मना सकता हूं।" उन्होंने कहा कि चीनी नेताओं को उनकी ज्यादा जरूरत है।

उन्होंने कहा, "चीन के नेताओं से बातचीत करना मेरे हित में है? जी नहीं। मैं तो सिर्फ एक भिक्षु हूं। मेरे जीवन का बड़ा हिस्सा तो गुजर चुका है। बाकी 10–15 बचे साल तो मैं किसी तरह गुजार ही लूंगा। यूरोप, अमेरिका, कनाडा में मेरे काफी दोस्त हैं।" वह फिर हंसते हैं, "मैं तो अपने को पूरी दुनिया का नागरिक समझता हूं।"

सच तो यह है कि दलाई लामा की दुनिया सिमट रही है क्योंकि चीन अपने आर्थिक प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए उन्हें अलग–थलग करने की कोशिश कर रहा है। पूर्वी एशियाई देश–जैसे बौद्ध थाइलैंड जो कभी उनका स्वागत करते थे– अब चीन के नाराज होने के डर से उन्हें अपने देश में आने की इजाजत नहीं देना चाहते। इस मामले में जापान ही अपवाद है। वर्ष 2012 में ब्रिटेन में डेविड कैमरन की दलाई लामा से मुलाकात के बाद दोनों देशों के बीच दो साल तक जिस तरह से रिश्तों पर बर्फ जमी रही वह दूसरे पश्चिमी देशों के लिए भी एक चेतावनी है।

दलाई लामा परेशान दिख रहे थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि "यदि यह सब मैंने किया होता तो मेरे पास यह कहने का पूरा अधिकार होता, "नहीं, ऐसा मत करो।" उन्होंने कहा, "यह रास्ता उन्होंने खुद चुना हैः तिब्बत के भीतर रहने वाले तिब्बती लोग। उन लोगों को मैं अपना बॉस मानता हूं। मैं उनकी आकांक्षा को आगे बढ़ा रहा हूं। मैं उनसे कोई मांग नहीं कर रहा हूं आप यह करो या आपको ऐसा नहीं करना चाहिए..

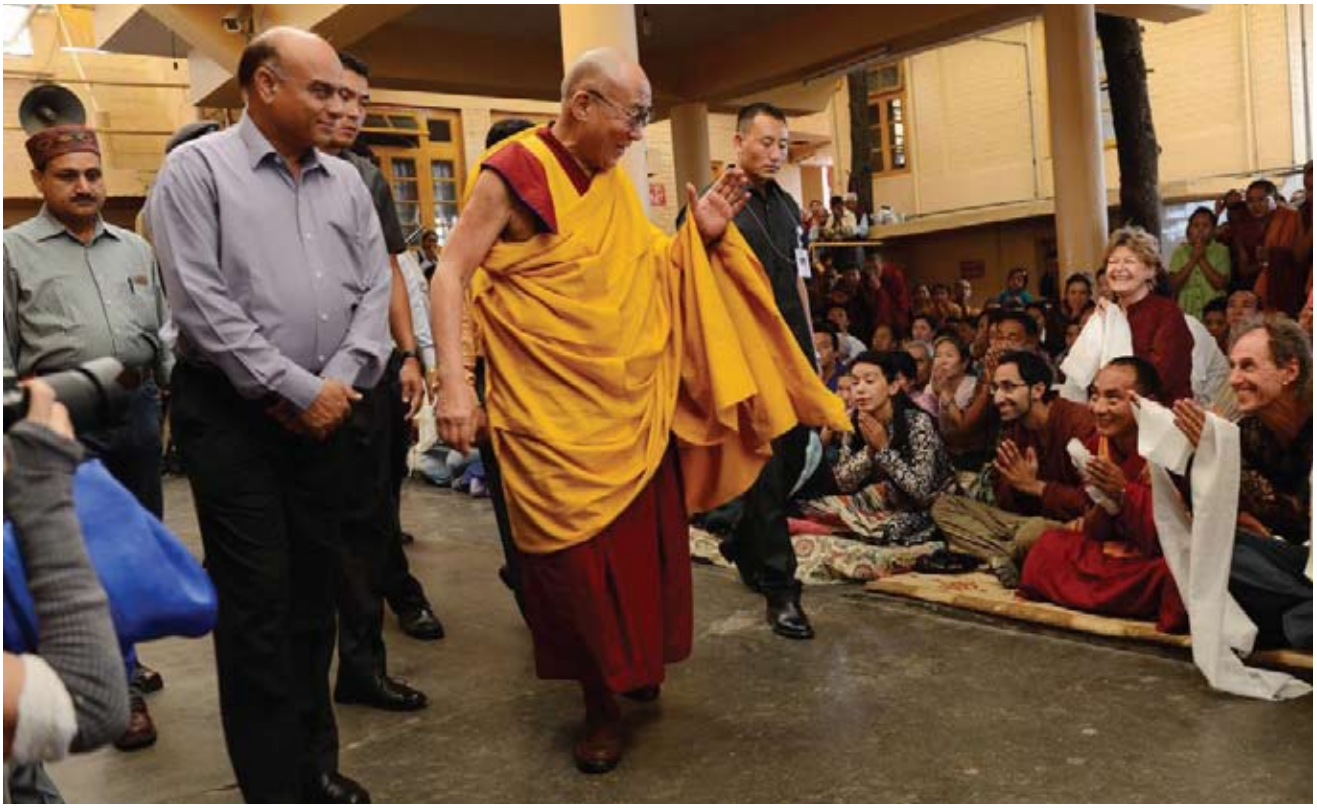

.इस तरह के हालात के लिए कठोर रुख वाले अधिकारी जिम्मेदार हैं। वे इसके लिए जिम्मेदार हैं। उन्हें इसे रोकने का तरीका निकालना होगा।"

मुझे जिज्ञासा हुई कि क्या उन्हें कभी निर्वासन में रहने का दुःख हुआ है और यदि वे अपनी बिलीगेर्ड जनता के साथ रुक जाते तो क्या तिब्बत की कहानी कुछ और होती? उन्होंने त्वरित जवाब दिया, "इसका एक साफ उदाहरण पंचेन लामा हैं। पंचेन लामा वहां रुक गए। उनके साथ क्या हुआ?"

वर्ष 1938 में जन्मे दसवें पंचेन लामा तिब्बत के आध्यात्मिक पद क्रम में दूसरे सर्वोच्च स्तर के लामा हैं। पहले उन्होंने चीनी शासन का समर्थन किया था, ले. किन बाद में तिब्बत के धार्मिक संस्थाओं, अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने–बाने का नष्ट करने की घोर आलोचना की। वर्ष 1962 में जब वह 24 साल के थे तो उन्होंने चीन के शीर्ष नेताओं को तिब्बत में कम्युनिस्ट नेताओं की गलतियों का विस्तृत वर्णन करते हुए एक याचिका दी। पहले तो चीनी नेतृत्व उनके साथ रियायत बरतता रहा, लेकिन बाद में उन्हें "तिब्बती जनता का दुश्मन" बताया गया और 14 साल तक घर में ही नजरबंद रखा गया। रिहा होने के बाद भी वह चीन के नेताओं से तिब्बत में सांस्कृतिक नरमी बरतने और आधुनिक नीतियां लागू करने पर जोर देते रहे। वर्ष 1989 में उनकी मौत हो गई। दलाई लामा ने कहा, "तिब्बत से मुझे बहुत से संदेश मिलते हैं, मौखिक संदेश, लिखित संदेश जिसमें कुछ बुजुर्ग लोग मुझसे कहते हैं कि 'कृप्या वापस आ जाएं, जितनी जल्दी आ जाएं उतना ही बेहतर है।' लेकिन कई समझदार लोग–लेखक, विद्यार्थी, रिटायर्ड अधिकारी मुझसे कहते हैं कि मुझे एक आज़ाद देश में रहने को तरजीह देना चाहिए। उनका साफ कहना है, "हमें अपना प्रतिनिधि एक आज़ाद देश में चाहिए।" दलाई लामा ने कहा, "कई चीनी, खासकर चीनी बौद्ध हर हफ्ते यहां आ रहे हैं। कई मुझसे पूछते हैं, "कृपया हमें भूलें नहीं और वापस आ जाएं।' मैं उनसे कहता हूं, 'अभी तक चीन सरकार मुझे शैतान समझती है। इसलिए यदि कोई शैतान एयरपोर्ट लौटता है तो उसे हथकड़ी लगा दी जाएगी और शैतान की जगह–जेल में डाल दिया जाएगा।"

मुझे आवंटित समय खत्म हो रहा था, इसलिए मैं उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी के सवाल पर आ गया। वर्ष 2011 में दलाई लामा ने चेतावनी दी थी कि उनकी मौत के बाद उनके उत्तराधिकारी की तलाश में रा. जनीतिक दखलंदाजी हो सकती है। लेकिन उन्होंने कहा कि इसकी जगह वह खुद को जीवित रहते हुए ही निर्गम के द्वारा किसी और शरीर में प्रकट कर सकते हैं और तरह का प्रकटीकरण को 'कर्म एवं प्रार्थनाओं' या उनके सीधे आशीर्वाद से पहचाना जाएगा।

यह जटिल पराभौतिकी की बात लगती है लेकिन यह संकेत मिलता है कि दलाई लामा अपने जीवनकाल में ही एक आध्यात्मिक उत्तराधिकारी चुन सकते हैं–लगभग निश्चित रूप से एक वयस्क, बजाय इसके कि मौत के बाद किसी बच्चे में पुनर्जन्म लिया जाए। भिक्षु ने कहा कि वह 90 वर्ष की आयु में कोई निर्णय लेंगे, वह उम्र जिसमें एक अमेरिकी विद्वान "मौत के साथ पोकर खेलने" की बात करते हैं।

उन्हें कोई जल्दी नहीं है। वह कहते हैं, "अपने शरीर को देखते हुए अगले दस साल में यह करना ठीक होगा। मैं समझता

हूं तब तक चीन के सोच में भी कुछ बदलाव आएगा। मेरी हमेशा यह प्रार्थना रही है कि चीनी नेतृत्व में कुछ सामान्य समझदारी आए। उनका दृष्टिकोण व्यापक हो और वे समग्रता से सोचें।"

यदि स्थिति में सुधार नहीं होता तो क्या वह तिब्बत में और गंभीर अशांति की स्थिति देखते हैं? इस सवाल पर उन्होंने कहा, "अपने जीवन में तो मैं ऐसा नहीं सोचता। मैं एक चीनी ऑफिस में काम करने वाले एक तिब्बती व्यक्ति से मिला था। बहुत भावुक होकर उसने मुझसे कहा था, उसकी पीढ़ी के लोग (30 से 40 वर्ष वाले) अक्सर कहते हैं कि जब तक दलाई लामा जिंदा है हम उनके बताए हुए रास्ते पर चलते रहेंगे, लेकिन अगर वह नहीं रहते हैं तो हमें दूसरे तरीके अपनाने होंगे। मैंने उनसे कहा, 'ऐसा कभी मत सोचो। हम बौद्ध हैं। हमें अहिंसा के रास्ते पर चलना ही चाहिए।' हमारे मामले में तो अहिंसा लगभग आत्महत्या जैसा ही है...आत्मदाह करने वाले लोग आसानी से चाहते तो दूसरों को नुकसान पहुंचा सकते थे। उन्होंने एक झगड़े का उदाहरण दिया जिसमें एक तिब्बती ने दूसरे को चाकू मार दी, लेकिन घायल व्यक्ति ने प्रतिकार करने से मना कर दिया और उसने इलाज कराने के लिए हमलावर का धन लेने से भी इंकार कर दिया। उन्होंने कहा, "ऐसे हैं तिब्बती, एक बार तय कर लिया तो सच्चे तरीके से अहिंसा के रास्ते पर चलेंगे, समझ गए आप?"

इसके साथ ही मेरा समय खत्म हो गया था। मुझे एक सफेद प्रार्थना का शॉल भेंट किया गया और मैं धर्मशाला की सड़कों तक वापस भेज दिया गया। लेकिन अगली सुबह दलाई लामा के निजी सचिव का फोन आया। मुझे बताया गया कि परमपावन को लगता है कि उन्होंने आत्मदाह पर अपने पक्ष को साफ तरीके से नहीं रख पाए हैं और वह इसे और बेहतर तरीके से बताना चाहते हैं। कुछ घंटों बाद मैं फिर से उनके आवास पर था, जहां कत्थई लबादे वाले भिक्षु जमा थे। "एक बात है कहनी है" उन्होंने दृढ़ता से कहा, "आत्मदाह करने वाले यह लोग शराब नहीं पिए हुए थे, और न ही इनको कोई पारिवारिक समस्या थी...कुल मिलाकर स्थिति इतनी तनावपूर्ण हो गई थी, इतना असंतोष था कि उन्होंने ऐसा दुःखद रास्ता अपना लिया। यह कहना कठिन है कि आपको ऐसे असहनीय स्थिति का सामना करना चाहिए और उसके साथ जिंदा रहना चाहिए। यदि मैं उनको कुछ विकल्प दे पाता तो यही कहता कि ऐसा मत करें। अपने जीवन को खत्म करने की जगह कृपया लंबे समय तक जिंदा रहें और हम यह या वह कर सकते हैं। लेकिन मेरे पास उनके लिए कोई विकल्प नहीं है। नैतिक रूप से उनसे यह कहना बहुत कठिन है। हमारे पास इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं है कि चुप रहें और प्रार्थना करें। बात साफ हुई?"

वह खड़े हो गए और इसके बाद मैं भी, लेकिन वह बोलते रहे। उन्होंने कहा, "ऐतिहासिक रूप से तिब्बत एक आज़ाद देश था। लेकिन हमें आगे की ओर देखना चाहिए और यथार्थ के मुताबिक चलना चाहिए। हमारा हित इसी में है कि चीन जनवादी गणतंत्र के भीतर रहें। तिब्बत पिछड़ा हुआ है और आधुनिक होना चाहता है। बहुत से तिब्बती अवैध तरीके से अमेरिका और कनाडा जाते हैं, आध्यात्मिक ज्ञान हासिल करने के लिए नहीं बल्कि डॉलर हासिल करने के लिए। तिब्बतियों को भी धन से प्यार है। इसलिए वे चीन में बने रहना चाहते हैं ताकि खूब धन कमाएं।" उन्होंने कहा, "हमारी मुख्य चिंता तिब्बती संस्कृति–शांति, अहिंसा, प्यार और करुणा की संस्कृति–को बचाने की है। जो कि आज की दुनिया में वास्तव में प्रासंगिक है। जब तक प्यार, ईमानदारी और पारदर्शिता की संस्कृति नहीं आती कुछ नहीं होता सकता।" उन्होंने कहा, "पुलिस और मौत की सजा से चीजों का हल नहीं निकल सकता। जब तक यहां (दिल की ओर संकेत करते हुए) बदलाव नहीं होता।"

उन्होंने कहा, "स्वायत्तता का असल मतलब अपनी संस्कृति की देखभाल करना है। एक बार इसके पूरी तरह से लागू होने के बाद हम चीन जनवादी गणतंत्र के भीतर रहने को तैयार हैं। हम तिब्बती ऐतिहासिक रूप से अलग हैं। लेकिन यह मायने नहीं रहता। हम साथ रहने को तैयार हैं।"

मेरा दर्शन का समय खत्म हो गया था। वहां से निकलने समय मुझे पांच चीनी व्यक्ति दिखे–छोटे कटे बालों, गहरे ढीले–ढाले पॉलिएस्टर ब्लेजर पहने– जो दलाई लामा से मिलने का इंतजार कर रहे थे। मैं उनकी मदद तो नहीं कर सकता था, लेकिन मुझे यह जिज्ञासा हुई कि वे एक–दूसरे से क्या बात करेंगे और क्या चीनियों एवं तिब्बतियों के साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से साथ रहने का एक नया युग आखिरकार शुरू हो चुका है। ◆

(एमी काजमिन एफटी के दक्षिण एशिया कॉरेस्पॉन्डेंट हैं)

तिब्बत पर छेन क्युआंगुओ का आलेख, जले पर नमक छिड़कने जैसा है

भाचुंग के. सेरिंग
(आईसीटी ब्लॉग, 17 नवंबर, 2013)

अपने काम के हिस्से के तहत मैं चीन के नेताओं का बयान देखता हूं कि क्या वे तिब्बत के मौजूदा हालात के बारे में कोई खुलासा कर रहे हैं। खासकर महासचिव शी जिनपिंग के नेतृत्व ग्रहण करने के बाद ऐसा ज्यादा हुआ है क्योंकि लोगों की उनसे अपेक्षाएं बहुत बढ़ गई हैं। इसलिए तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र के पार्टी सचिव छेन कुआंग्वो के पार्टी जर्नल क्विइशी (संख्या 21, 2013) में छपा लेख "अपनी तलवार दिखाते हुए तिब्बत के वैचारिक क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करना" पढ़ना दिचस्प है जिसका अंग्रेजी में अनुवाद हाई पीक्स प्योर अर्थ द्वारा किया गया है। यह लेख इस बारे में है कि मीडिया के द्वारा तिब्बती लोगों के दिमाग पर नियंत्रण के लिए चीनी नेतृत्व को किस तरह से अपना प्रयास तेज करना चाहिए। इस आलेख में मेरे हिसाब से तीन चीजें नोट करने लायक हैं।

पहला, यह आलेख आज तक चीन की तिब्बत नीतियों के विफल होने की ठोस स्वीकृति है। इसमें उन "दुश्मन ताकतों" की बात की जाती है जिन्होंने चौदहवें दलाई लामा गुट से सांठ–गांठ कर लिया है और तिब्बत को घुसपैठ और अलगाववादी गतिविधियों के लिए प्रमुख क्षेत्र तथा तोड़–फोड़ करने और उपद्रव करने के मुख्य युद्धस्थल के रूप में देखते हैं। उन्होंने इस रणक्षेत्र में संघर्ष करने के लिए सभी साधनों का इस्तेमाल करने की कोशिश की है, लोकप्रिय भावनाओं और आम जनता का, इस प्रकार उनके सभी प्रयासों ने वैचारिक क्षेत्र की लड़ाई में तिब्बत में एक तूफान ला दिया है।"

आलेख में आगे कहा गया है, "हम ऐसी व्यापक शैक्षणिक गतिविधियां चलाएंगे पुराने तिब्बत की नई तिब्बत से तुलना करते हुए, जिसमें विभिन्न नस्लीय समूहों के लोगों को यह निर्देश दिया जाएगा कि पार्टी के प्रति कृतज्ञ रहें, पार्टी की सुनें और पार्टी का अनुसरण करें."

दूसरे शब्दों में कहें तो तिब्बत की "मुक्ति" के 60 साल से ज्यादा बीत जाने के बाद भी चीनी प्रशासन तिब्बती लोगों के दिल और दिमाग में जगह नहीं बना सका है, जो कि अब भी दलाई लामा के प्रति वफादारी और श्रद्धा का प्रदर्शन करते दिख रहे हैं।

साथ ही, करीब 60 साल के बाद भी चीनी प्रशासन आजाद तिब्बत (प्राचीन तिब्बत) को मौजूदा समाजवादी तिब्बत (नए तिब्बत) की तुलना में तिब्बती जनता के सामने नकारात्मक रूप से यदि पेश करना पड़ रहा है, तो इसका मतलब है कि कहीं न कहीं कुछ कमी है। अच्छा हो या बुरा, तिब्बत में रहने वाले वे तिब्बती जो कि जिन्होंने अपने जीवन के कुछ साल 1959 से पहले और उसके बाद के तिब्बत में गुजारे हैं और वे अपने सीधे अनुभव की गई धारणा को किसी भी तरह से "शैक्षणिक गतिविधियों" के असर तो बदलने वाले हैं नहीं।

दूसरी बात, हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि चीनी प्रशासन अपने कार्यकर्ताओं और पार्टी पदाधिकारियों पर पकड़ खो रहा है जो आधिका. रिक लाइन के हिसाब से नहीं चल रहे हैं। हालांकि, आर्टिकल में यह साफ नहीं कहा गया है, लेकिन यह हो सकता है कि इनमें मुख्यतः तिब्बती अधिकारी हों।

उदाहरण के लिए, इसमें कहा गया है, हमें विभिन्न स्तरों पर पार्टी समित के 'प्रमुखों' की राजनीतिक जिम्मेदारी बढ़ानी चाहिए, उनसे कहना चाहिए कि वे काम का नेतृत्व करें और चुनौती से सीधे निपटें। उन्हें सरकारी मीडिया, स्थानीय पार्टी अखबार, स्थानीय रेडियो स्टेशन और स्थानीय टीवी स्टेशन को सुनने और देखने के कार्य का नेतृत्व करना चाहिए। उन्हें स्थानीय मीडिया और जनमत पर नियंत्रण और उसे अपनी तरफ मोड़ने के प्रयासों का भी नियंत्रण करना चाहिए।"

आलेख में कहा गया है, "हमें दुष्प्रचार कर सकने वाले बेहतरीन कार्यकर्ताओं के समूह को प्रशिक्षित करना चाहिए जो राजनीतिक रूप से भरोसेमंद हों और जो अपने प्रोफेशनल कार्य में पूरी तरह से प्रवीणता रखते हों।

इससे ही जुड़ी एक बात मेरे ख्याल से यह साबित करती है कि फिर तिब्बती मूल के बुद्धिजीवियों पर भरोसा नहीं किया जा रहा। "हम बुद्धिजीवियों के ऐसे दस्ते तैयार करने होंगे जो उच्च गुणवत्ता के हों, जो पार्टी के प्रति वफादार हों, जो पार्टी की कृपा के प्रति कृतज्ञ हों और जो पार्टी का अनुसरण कर सकें।"

या तो छेन क्वांगुओ बुद्धिजीवियों की क्षमता के प्रति असम्मान दिखा रहे हैं या तिब्बती जनता की हालत ऐसी हो गई है कि बुद्धिजीवी भी अब 'पार्टी' के प्रति सम्मान दिखाने को तैयार नहीं हैं। अन्यथा, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने यदि तिब्बती जनता, बुद्धिजीवियों के लिए बहुत सकारात्मक कदम उठाए होते, तो वे पार्टी की तारीफ करने में सबसे आगे होते।

इससे मैं तीसरे निष्कर्ष पर पहुंचता हूं, कि यह आलेख इस बात का साफ संकेत है कि चीनी अधिकारियों के पास तिब्बतियों को यह दिखाने के लिए कुछ भी ठोस नहीं है कि उनके हितों की रक्षा हो रही है। तार्किक रूप से यदि कोई किसी समुदाय को बताना चाहता है कि उनके लिए अच्छा हो रहा है ताकि इसके लिए प्रचार–प्रसार का महत्व दूसरे स्थान पर आता है। सबसे पहले इस बात की जरूरत है कि कुछ अच्छा किया जाए जिसका कि प्रचार किया जा सकता हो।

इसलिए, इसमें कुछ तो गड़बड़ है जब छेन क्युंगओ कहते हैं, "हमें नए समाजवादी तिब्बत में आ रहे जबर्दस्त बदलावों के प्रसार और तिब्बत में विभिन्न नस्लीय समूहों के लोगों के नए स्थिर, शांतिपूर्ण और खुशहाल जीवन को प्रचारित करने का काम दृढ़ता से जारी रखना चाहिए।"

कोई भी यह समझ सकता है कि यदि तिब्बत में इतना "जबर्दस्त बदलाव" आया है तो क्या इसको तिब्बती जनता खुद अनुभव नहीं कर रही होगी और यह बात उसे दूसरे समझाएंगे?

इन सबसे भी बड़ी बात यह है कि छेन कुआंगुओ का यह लेख साफतौर पर इस बात का संकेत है कि तिब्बती जनता पर शासन करने वाले चीनी नेताओं को तिब्बती जनता और समाज की प्रकृति का बिल्कुल अंदाजा नहीं है। "मध्यम मार्ग नीति", "उच्च स्तर की स्वायत्तता" जैसे राजनीतिक मसलों को परे रखते हुए कोई भी चीनी तिब्बती इतिहास, संस्कृति, धर्म और जीवन पद्धति को समझ नहीं सकता या उसका सम्मान नहीं कर सकता। और ऐसा चीनी ही यह बात कह सकता है कि, "हमें कार्यकर्ताओं और विभिन्न नस्लीय समूहों के लोगों को इस बारे में शिक्षित और मार्गदर्शित करना होगा कि वे तिब्बती बौद्ध धर्म को दलाई लामा से अलग रखें और चौदहवें दलाई लामा से दलाई लामा की उपाधि ले ली जाए ताकि वे सभी लोग दलाई गुट से पूरी तरह से दूर हो जाएं।"

तिब्बती जनता और दलाई लामा के बीच रिश्ता चीनी की कम्युनिस्ट पार्टी या राष्ट्रवादी चीनियों से भी पुराना है। इसके अलावा, जैसा कि हम जानते हैं, बुनियाद को नष्ट किए बिना तिब्बती बौद्ध धर्म को दलाई लामा से अलग नहीं किया जा सकता, जिसकी बात छेन गुंआंगुओ कर रहे हैं।

यहां मैं यह कुछ विरोधाभासी बात कहना चाहूंगा कि चीनी प्रशासन इस विशेष रिश्ते को जानता है और वह इससे डरा हुआ है। छेन कुंआंगुओ का यह लेख चीनी इस रिश्ते को तोड़ने के लिए चीनी नेतृत्व द्वारा किए जा रहे प्रयासों में से ही एक है। दलाई लामा की तस्वीर रखने पर प्रतिबंध इससे ही जुड़ा मामला है और यह कुआंगुओ की इस कठोर टिप्पणी में भी जाहिर होता है कि, "उन्हें शत्रु ताकतों तथा चौदहवें दलाई गुट की आवाज सुनने और तस्वीर देखने से रोका जाए।" छेन कुआंगुओ के इस आक्रमण की तिब्बती जनता में क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए? मैं दो बातें दोहराना चाहूंगा जिसे मैंने वर्ष 2008 में एक और लेख में कहा था।

पहला, मेरा मानना है कि तिब्बतियों को तिब्बत के भीतर और बाहर अपनी तिब्बती पहचान पर जोर देते रहना चाहिए। इसे तिब्बती संघर्ष के व्यापक अवधारणा की तरह समझना चाहिए और सिर्फ राजनीतिक पहचान के रूप में ही सीमित नहीं करना चाहिए।

दूसरा, तिब्बत के भीतर और बाहर के तिब्बतियों को अपनी आकांक्षाओं की समानता पर जोर देना चाहिए। मेरा मानना है कि तिब्बती आकांक्षाओं की समानता तिब्बती स्वतंत्रता संघर्ष की मजबूत बुनियाद है। धो, खम और यू (जिनसे परंपरागत तौर पर समूचा तिब्बती बनता है) के तिब्बतियों को हमेशा इस समानता को रेखांकित करना चाहिए। इसलिए यदि महासचिव शी जिनपिंग यदि तिब्बत के बारे में कुछ सकारात्मक योजना बना रहे हैं, तो इसमें उन नेताओं की सोच बदलना भी शामिल होना चाहिए जो कि तिब्बती जनता के ऊपर शासन करने के लिए चुने गए हैं। मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूं कि सभी तिब्बती छेन क्यूआंगुओ के इस लेख को जले पर नमक छिड़कने जैसा ही मानेंगे। जब तक कि चीनी नेता तिब्बती जनता की परवाह नहीं करते, ऐसे आलेख चीन के अपने हितों के भी खिलाफ ही जाएंगे। ◆

तिब्बतियों का आत्मदाहः दुनिया की बेरूखी से बढ़ती हताशा

डामियन ग्रैमेटिकस
(बीबीसी, 2 दिसंबर, 2013)

सूर्योदय का समय है और तापमान शून्य से 20 डिग्री नीचे है। बर्फ से ढकी पूरी घाटी में भिक्षुओं के प्रार्थना की ध्वनि गूंज रही है। हम नुकीले पर्वत की ऊंचाई पर हैं जहां से रास्ता तिब्बत पठार की ओर जाता है। तिब्बत से बाहर के इस कठोर और खूबसूरत इलाके में करीब 60 लाख तिब्बती रहते हैं। एक भिक्षु छोटे से स्तूप की ओर जाने वाली सीढ़ियों से बर्फ हटा रहे हैं। स्तूप के भीतर परिक्रमा पथ पर प्रार्थना चक्र दिख रहे हैं।

चोटी के और ऊपर मठ की सुनहली छत के ऊपर सुबह की धुंध दिख रही है। उच्च पर्वतीय घाटियों में छिट–पुट बिखरे ये मठ तिब्बती जीवन दर्शन का संरक्षण करते हैं। गहरे लाल लबादे वाले भिक्षु सुबह की प्रार्थना से बाहर आ रहे हैं, जबकि मालाओं से सुशोभित हो रही औरतें मठ की परिक्रमा करती हैं और इसके बाद प्रांगण में आकर लेटकर साष्टांग प्रमाण करती हैं। चीनी सैनिकों ने करीब आधी शताब्दी पहले ही तिब्बत पर कब्जा कर लिया है और दलाई लामा को निर्वासन में जाना पड़ा है, जिसके बाद मठों की संख्या तेजी से कम हुई है। तिब्बती इलाकों में तनाव को देखते हुए करीब एक महीने से तिब्बती इलाकों में पत्रकारों को नहीं जाने दिया जा रहा है। हम चुपचाप घुस गए थे। चीन यहां विदेशी दखल नहीं चाहता। जिन भिक्षुओं से हमने संपर्क किया वे काफी घबराए दिख रहे थे, चीन ने निगरानी बढ़ा दी है।

एक युवा भिक्षु ने सिर हिलाते हुए यह संकेत दिया कि वह बात नहीं करना चाहते, दूसरे कई भिक्षु हमसे दूर चले गए या अपने कमरों में घुस गए। उनके सचेत रहने के लिए वाजिब वजहें हैं।

चीन न केवल मठों पर नियंत्रण सख्त कर रहा है, बल्कि वह पूरे तिब्बती जीवन एवं संस्कृति पर नियंत्रण कर रही है। इससे तिब्बतियों के बीच कुंठा बढ़ रही है। और वहां इस तरह की धारणा है कि आर्थिक संकट की वजह से बाहरी दुनिया, खासकर पश्चिमी जगत चीन को उसके मानवाधिकार रिकॉर्डों के मामले में घेरने को तैयार नहीं है। दूसरे देश आखिरकार चीन के बाजारों और उसके वित्त को हासिल करना चाहता है।

इसलिए तिब्बती चरम विरोध का सह. ारा ले रहे हैं, खुद को आग लगाकर। अपने मातृभूमि में चीनी शासन के विरोध में पिछले वर्षों में अब तक 120 से ज्यादा इस तरह की आत्मदाह की घटनाएं हो चुकी हैं। बताया जाता है कि इनमें से कई ने आत्मदाह से पहले दलाई लामा की वापसी का आह्वान किया था। यह हताशा की कार्रवाई हो सकती है, लेकिन चीन का कहना है कि आत्मदाह करने वाले को दलाई लामा उकसा रहे हैं, यहां तक कि इसके लिए धन दे रहे हैं।

व्यापक अशांति फैलने के डर से चीन ने दमन और सख्त कर दिया है, उन तिब्बतियों को गिरफ्तार किया जा रहा है और यहां तक कि जेल में डाल दिय जा रहा है जो जिन पर आत्मदाह करने वालों का सहयोग करने का आरोप है। आत्मदाह कर अपनी जान देने वाले ऐसे ही एक व्यक्ति घर के बाहर प्रार्थना का ध्वज फहरता दिख रहा है। हम उनके परिवार तक पहुंचने में कामयाब रहे, लेकिन हमें उनकी पहचान गुप्त रखनी होगी।

उनके भाई ने बताया कि दो बच्चों के पिता इस व्यक्ति को किसी से कोई धन नहीं मिला है। उनको तो यह बात ही अपमानजनक लगी। उन्होंने कहा कि प्रशासन के लोग उनसे बार–बार सवाल करते रहे हैं। वे यह जानना चाहते हैं कि उनके भाई ने आत्मदाह क्यों किया, लेकिन वे तो यही बता सकते हैं कि उनका भाई एक अच्छा आदमी था और अपने अंतःकरण के हिसाब से उसने यह कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि तिब्बती कुंठित हो चुके हैं।

उन्होंने कहा, "मुझे अक्सर यह लगता है कि एक तिब्बती होने के नाते मैं दोयम दर्जे का नागरिक हूं. मुझे यह सब सोचकर काफी बुरा लगता है।"

उन्होंने कहा, "जो तिब्बती शहरों में काम करने जाते हैं, उन्हें दूसरों की तुलना में सांवला और गंदा माना जाता है, हमारे साथ अक्सर भेदभाव होता है। मैं नहीं समझता कि मुझे कुछ अलग समझा जाना चाहिए।"

उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रशासन के लोगों ने उनके परिवार से कोई बदले की कार्रवाई तो नहीं की है, लेकिन उनके मां–बाप निश्चित रूप से विदेशी पत्रकारों से बात करने से डरते हैं।

इन उजाड़ और हवादार पहाड़ों में, जहां चरवाहे पहाड़ियों पर घूमते झबरे बालों वाले काले याक की चौकसी करते रहते हैं, तिब्बतियों के लिए काम कम ही हैं। दूसरी तरफ, चीन का कहना है कि वह तिब्बत को बदल रहा है, सड़कें बना रहा

है, नई संपदा ला रहा है। हालांकि, विकास टकाराव का एक और स्रोत साबित हो रहा है। मध्य अगस्त में केंद्रीय तिब्बत में एक विरोध प्रदर्शन हुआ क्योंकि वहां के लोग इस बात से डरे हुए थे कि खनन कार्यों से स्थानीय पर्यावरण नष्ट हो रहा है। बहुत से तिब्बतियों को यह लगता है कि चीन के फायदे के लिए उनके संसाधनों का दोहन किया जा रहा है।

दूसरे तिब्बती प्रदर्शनों की तरह ही इस विरोध के प्रति चीन की प्रतिक्रिया काफी सख्त रही। निर्वासित तिब्बती संगठनों ने बताया कि विरोध प्रदर्शन के समय पुलिस पहुंची और उसने भीड़ को हटाने के लिए आंसू गैस और बिजली के प्राड का इस्तेमाल किया। एक और गांव में हमें एक महिला मिली जो अपने जानवरों के लिए चारे के रूप में इस्तेमाल होने वाले भूसे का ढेर लगा रही थी। उसने हमें बताया कि उसके घर के पास स्थित मठ में पांच–छह आत्मदाह हो चुके हैं। वह अपना नाम नहीं बताना चाहती थी, लेकिन उसने स्थानीय इलाके में इन आत्मदाह के बाद होने वाले दमन के बारे में विस्तार से बताया। उसने कहा, "हम दबाव में हैं। कई लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस आई और लोगों को हिरासत में ले लिया। गिरफ्तार लोगों के परिवार वालों को कोई जानकारी नहीं है कि उन्हें कहां ले जाया गया है।

थोड़ी ही दूरी पर कुछ तिब्बती एक ती. र्थस्थल की परिक्रमा कर रहे थे और प्रार्थना चक्र घुमा रहे थे। कुछ उम्रदराज महिलाएं इमारत के बाहर झुकी हुई थीं, अपने हाथ जोड़कर। इसके बाद वे प्रार्थना करते हुए चेहरा झुकाते हुए लेट गईं। चीन सरकार के दमन और मीडिया के लिए पूरी तरह तिब्बत को बंद कर देने के बाद अब आत्मदाह की घटनाओं की खबरें कम आ रही हैं।

लेकिन वहां के लोगों की शिकायतों का कोई समाधान नहीं किया जा रहाः तिब्बतियों को डर है कि उन्हें हाशिये पर धकेला जा रहा है, उनकी संस्कृति का क्षरण हो रहा है, उनकी आवाज को बंद किया जा रहा है और ऐसे में बाकी दुनिया दूर खड़े होकर तमाशा देख रही है। ◆

तिब्बत में हताशा

(न्यूयॉक टाइम्स, संपादकीय, 29 नवंबर, 2013)

गत 11 नवंबर को चीन के क्विंघई प्रांत में 20 वर्षीय तिब्बती बौद्ध भिक्षु सेरिंग ग्याल ने आत्मदाह कर लिया। श्री ग्याल की मौत के साथ ही तिब्बत में वर्ष 2003 से अब तक आत्मदाह करने वालों की संख्या 123 तक पहुंच गई है। आत्मदाह करने वाले कुछ लोगों द्वारा छोड़े गए पत्रों और मरने वालों के अंतिम शब्द सुनने वाले प्रत्यक्षदर्शियों से जो कुछ पता चलता है उससे इस बात में कोई संदेह नहीं रह गया है कि इस तरह की भयानक मौतों की वजह क्या हैः चीनी दमन के प्रति गुस्सा।

चीन द्वारा 1950 में कब्जाए जाने और 1959 में तिब्बती बौद्धों के आधात्मिक नेता दलाई लामा के निर्वासन के लिए मजबूर होने के बाद तिब्बत में पिछले इतिहास में कई बार हिंसा भड़की है। लेकिन आत्मदाह की मौजूदा लहर नई और दुःखद प्रचलन है। वर्ष 2008 में पूरे इलाके में विरोध प्रदर्शनों की लहर शुरू होने के बाद चीन की दमनकारी नीतियां बढ़ गई हैं जिससे बहुत से तिब्बतियों को यह लगता है कि उन्हें अपनी भाषा, संस्कृति और धर्म जबरन दूर किया जा रहा है। इन नीतियों के तहत स्कूलों में पढ़ाई का माध्यम तिब्बती की जगह चीनी करना, भिक्षुओं पर निगरानी रखने के लिए करीब 21,000 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अधिकारियों को तिब्बती मठों में भेजना, भिक्षुओं को दलाई लामा की आलोचना करने के लिए मजबूर करना, दलाई लामा की तस्वीर रखने पर प्रतिबंध लगाना, तिब्बती गांवों शहरों–कस्बों और मठों के आसपास भारी संख्या में सशस्त्र बलों की तैनाती, मठों को बंद करना और विरोध प्रदर्शनकारियों की गिरफ्तारी, पिटाई और उन गोलीबारी शामिल हैं।

चीन ने आत्मदाह की इन घटनाओं के लिए दलाई लामा को जिम्मेदार ठहराया है। लेकिन दलाई लामा ने इनकी आलोचना की है। वास्तव में बहुत से लोगों को यह डर है कि यदि 78 वर्षीय दलाई लामा के जिंदा रहने के दौरान ही तिब्बती भावनाओं को शांत करने की तैयारी नहीं की गई तो दलाई लामा के न रहने पर तिब्बती विरोध के लिए हिंसक रास्ता अख्तियार कर सकते हैं।

पिछले साल चीन में राष्ट्रपति शी जिनपिंग के सत्ता संभालने के बाद इस बात की उम्मीद बनी थी कि चीन तिब्बत के प्रति अपनी सख्त नीतियों से कुछ पीछे हट सकता है। हाल में कम्युनिस्ट पार्टी के प्लेनम बैठक में जिस तरह से सुधारों की लहर चलाने का वचन दिया गया था उससे यह पता चलता है कि वह घरेलू चुनौतियों से निपटने के इच्छुक हैं। उन्हें कम से कम अब तिब्बत में सबसे घातक नीतियों को नरम बनाने के रास्ते पर आगे बढ़ना चाहिए। चीन को दलाई लामा के प्रतिनिधियों के साथ वार्ता फिर से शुरू करनी चाहिए जो वर्ष 2010 में ठप हो गई है। इन कदमों के बिना तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र और पड़ोसी सिचुआन, क्विंघई, गांसू राज्यों जहां बड़ी संख्या में तिब्बती रहते हैं, अशांत क्षेत्र ही बने रहेंगे और वहां के लोग चीन के आर्थिक विकास में पूरी तरह से भागीदारी से वंचित रहेंगे। ◆

फ्रीडम इन एक्साइल

(तिब्बतनरीव्यू डॉट नेट, 18 अक्टूबर, 2013)

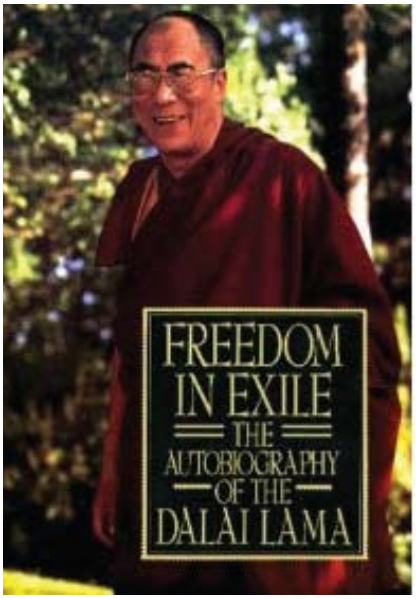

यह पुस्तक दलाई लामा का संस्मरण है, लेकिन इससे तिब्बत के इतिहास की जानकारी मिलती है और बौद्ध धर्म का भी एक विहंगावलोकन हो जाता है। यह पुस्तक मुझे बहुत ही जानकारीपरक लगी, दलाई लामा के एक व्यक्ति के रूप में कैसे हैं, उनके लालन–पालन, शिक्षा और जीवन, तिब्बत की संस्कृति और बौद्ध धर्म के बारे में जानने के लिए। मुझे इसमें जो चीज सबसे ज्यादा पसंद आई वह थी, धर्म के बारे में उनके विचार। उनका यह दृढ़ रूप से मानना है कि सभी धर्म वैध हैं। वह लोगों को बौद्ध धर्म में धर्मांतरण नहीं करना चाहते, बल्कि उनका मानना है कि सभी धर्म कुछ बुनियादी तत्व प्रदान करते हैं और एक–दूसरे के अनुयायियों को हासिल करने की जगह उन्हें दुनिया को बेहतर स्थान बनाने के लिए काम करना चाहिए। एक बार फादर मर्टोन से मुलाकात के दौरान बातचीत के बारे में वह कहते हैं:

"सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने मुझे यह आभास कराया कि हर बड़ा धर्म अपने प्यार और करुणा की वजह से अच्छे मनुष्य तैयार कर सकता है (पेज 208) ।"

वैसे तो मैं एक धार्मिक व्यक्ति नहीं हूं, लेकिन मेरी इच्छा है कि विभिन्न धर्मों के लोग इस पर कम बात करें कि उनमें क्या अलग है, बल्कि इस पर बात करें कि उनमें क्या समानता है। उन्होंने कहा कि वास्तव में तो उनका यह मानना है कि धर्म काफी हद तक संस्कृति से जुड़ा है, इसलिए लोगों के लिए यह बेहतर होगा कि अपनी संस्कृति के धर्म से ही जुड़े रहें:

"मेरा मानना है कि लोगों के लिए यह बेहतर रहेगा कि अपनी परंपरा से जुड़े रहें, बजाय धर्म बदलकर ऐसी संस्कृति अपना लेने के जो वास्तव में उनके लिए अजनबी हो और उनके दिन प्रति दिन के जीवन का हिस्सा न हो। आखिरकार मेरा हमेशा यह मानना रहा है कि सभी धर्मों का उद्देश्य समान है: हमें बेहतर बनाने, कम स्वार्थी और आखिरकार खुशहाल प्राणी बनाने के लिए। यही धार्मिक जीवन की कुंजी, उसका केंद्र बिंदु है। इसलिए मेरी राय में लोगों को अपने परंपरागत मूल्यों को बनाए रखना चाहिए, अपने धर्म सहित। (पेज 307)

ऐसे धार्मिक नेता को सुन कर काफी अच्छा लगा जो इस महत्व पर जोर दे रहा हो कि विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक रिश्ते होने चाहिए और इस बात पर कि आखिर अपनी परंपरा के भीतर ही रहकर किसी लक्ष्य के प्रति काम करना बेहतर है।

किताब के धार्मिक पहलुओं के अलावा मुझे इसका ऐतिहासिक पहलू बहुत आकर्षक लगा। हाईस्कूल में इतिहास मेरा पसंदीदा विषय था और तब हमने आधुनिक चीनी इतिहास की थोड़ी पढ़ाई की थी, इस दौरान मेरी बहुत से चीनी लोगों से जान–पहचान हुई थी। माओ और अन्य चीनी नेताओं के बारे में थोड़ा अलग दृष्टिकोण को देखना दिलचस्प था। मेरा दृष्टिकोण पहले मुख्यतः नया था, इसलिए यह मेरे लिए नया था।

उस दौरान के मेरे पहले किए गए इतिहास के अध्ययन का मतलब था कि मैं मार्क्सवाद के बुनियादी तत्वों से परिचित था। इस मामले में दलाई लामा से मैं सहमत हूं कि मार्क्सवाद में काफी अच्छी बातें हैं, लेकिन दुनिया में इसका स्वरूप काफी तोड़–मरोड़कर पेश किया गया है। मैं यह भी देख सकता हूं कि आखिर वह क्यों बौद्ध धर्म को मार्क्सवाद के अनुकूल बताते हैं।

इसके अलावा उन्होंने एक देश में अल्पसंख्यक होने की समस्या पर भी प्रकाश डाला। बहुत से तिब्बती दुनिया के कई देशों (मुख्यतः भारत) में अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में रहते हैं और उन्हें अपने सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने का महत्व पता है। वह इस बात पर अटल हैं कि इसमें बच्चों की शिक्षा का बहुत प्राथमिक महत्व है और इसलिए वह बच्चों की शिक्षा के हर प्रयास को समर्थन देते हैं। भविष्य के एक टीचर बनने की आकांक्षा के नाते मैं भी इस पर सहमति जताता हूं।

इस पुस्तक को पढ़ने से लगता है कि दलाई लामा कितने विनम्र और तारीफ के काबिल व्यक्ति हैं। वह अपनी गलतियों और कमियों को शीघ्र ही स्वीकार कर लेते हैं, खासकर तब जब बचपने में उनसे गलतियां हुई थीं, लेकिन इसके साथ ही वह काफी मनोविनोद और जिज्ञासा वाले व्यक्ति भी दिखते हैं। मेरा मानना है कि दूसरे धर्मों के प्रति अपनी सहिष्णुता के अलावा मैं उनके जिस पहलू का प्रशंसक हूं, वह यह है कि वह ज्यादा से ज्यादा लोगों से बात करना चाहते हैं और उन्हें समझना चाहते हैं। वह यह जानना चाहते हैं कि दूसरे क्या सोचते हैं। उनका मानना है कि हर किसी की उनके जीवन के बारे में कीमती राय हो सकती है और इस विचार का महत्व है। मैं समझता हूं कि इस किताब से मुझे मिलने वाला यह सबसे कीमती सबक रहा।

मेरा मानना है कि पुस्तक के सबसे मजबूत बिंदु उनके जीवन के ऐतिहासिक और धार्मिक पहलू हैं। कई बार इसमें मुश्किल आई कि कौन क्या था। कई नाम आदरसूचक उपाधि के साथ हैं, और वे एक ही तरह के हैं। निश्चित रूप से उन्हें न समझ पाने के पीछे मेरी पश्चिमी पूर्वाग्रह हो सकता है (यदि मिस्टर एक्स या रेवेरेंड वाई होता तो निश्चित रूप से मुझे कोई दिक्कत नहीं होती), लेकिन इसका मतलब यही है कि मुझे इस पुस्तक को पढ़ने में सामान्य से थोड़ा ज्यादा समय लगा।

मैं उन लोगों को तो निश्चित रूप से यह पुस्तक पढ़ने का सुझाव दूंगा जिनकी धर्म, इतिहास, धार्मिक आज़ादी और ऐसे व्यक्ति के जीवन में रुचि है जिसने अपना ज्यादातर उपदेश दुनिया भर में धार्मिक सहिष्णुता के बारे में दिया हो। ◆